Roll No. ..... Total Pages: 04

4171

M. A. (Previous) EXAMINATION, 2018

संस्कृत साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र

वैदिक साहित्य

Time: Three Hours

Maximum Marks: 100

PART – A (खण्ड – अ) *[Marks: 20]*

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – B (खण्ड – ब) *[Marks: 50]*

Answer five questions (250 words each).

Selecting one from each unit. All questions carry equal marks.

*प्रत्येक इकाई से **एक–एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्न कीजिए।*

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – C (खण्ड – स) *[Marks: 30]*

Answer any two questions (300 words each).

All questions carry equal marks.

*कोई **दो प्रश्न** कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।*

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड– अ

प्र.1 सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

इकाई – I

(i) सवितृ देवता की दो विशेषताएँ लिखिए।

(ii) चारों वर्णो की उत्पत्ति किस देवता में वर्णित है?

इकाई – II

(iii) याज्ञवल्क्य से मुक्ति एवं अतिमुक्ति विषयक प्रश्न किसने पूछा?

(iv) शाकल्य ने याज्ञवल्क्य से किस विषय पर प्रश्न पूछे?

इकाई – III

(v) निघण्टु क्या है?

(vi) गौ, अश्व, पुरुष, हस्ती, किसके उदाहरण हैं?

इकाई – IV

(vii) यजुर्वेद के दो मुख्य भाग कौन कौन से हैं?

(viii) उपनिषद् शब्द की व्युत्पत्ति बताइये।

इकाई – V

(ix) अनुदात्त की परिभाषा लिखिए।

(x) वैदिक मन्त्रों के विभिन्न पाठों में से किन्हीं 4 पाठ के नाम बताइये।

खण्ड– ब

इकाई – I

प्र.2 निम्नलिखित मंत्र की ऋषि, देवता तथा छन्दोल्लेखपूर्वक व्याख्या कीजिए :

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

अथवा

वि या सृजति समनं व्यर्थिनः पदं न वेत्योदती।

वयो निकिष्टे पप्तिवासं आसते व्युष्टौ वाजिनीवति।।

इकाई – II

प्र.3 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या संस्कृत भाषा में कीजिए–

याज्ञवल्क्येति होवाच कतिभिरयमधर्ग्भिर्होतास्मिन्यज्ञे करिष्यतीति

तिसृभिरिति कतमास्तास्तिस्रइति पुरोनुवाक्या च याज्या च

शस्यैव तृतीया किं ताभिर्जयतीति यत्किंचेदं प्राणभृदिति''

अथवा

योऽन्तरिक्षे तिष्ठन्नन्तरिक्षादन्तरो यमन्तरिक्षं न वेद यस्यान्तरिक्षँ शरीरं योऽन्तरिक्षमन्तरो यमयत्येष त आत्मान्तर्याम्यमृतः। यो वायौ तिष्ठन्वायोरन्तयो यं वायुर्न वेद यस्य वायुः शरीरं यो वायुमन्तरो यमयत्येष त आत्मान्तर्याम्यमृतः।।

इकाई – III

प्र.4 निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः जायतेऽस्तिविपरिणमते वर्धतेऽपक्षीयते विनश्यतीति। जायते इति पुर्वभावस्यादिमाचष्टे। नापरभावमाचष्टे न प्रतिषेधति।

अथवा

अथापि इदमन्तरेण मन्त्रेषु अर्थ प्रत्ययो न विद्यते। अर्थम अप्रतियतो नात्यन्तं स्वरसंस्कारोद्धेशः। तदिदं विद्यास्थानम्। व्याकरणस्य कात्स्न्र्यम् स्वार्थं साधकं च।

इकाई – IV

प्र.5 वैदिक देवताओं का परिचय दीजिए।

अथवा

षड्वेदांगों का परिचय दीजिए।

इकाई – V

प्र.6 प्रश्नसंख्या दो के किसी एक मंत्र का पदपाठ तथा स्वरांकन कीजिए।

खण्ड– स

इकाई – I

प्र.7 नासदीय सूक्त का सारांश लिखिए।

इकाई – II

प्र.8 याज्ञवल्क्य एवं मार्गी संवाद का सार लिखिए।

इकाई – III

प्र.9 पदों के चार भेदों का परिचय दीजिए।

इकाई – IV

प्र.10 ब्राह्मण ग्रन्थों का परिचय दीजिए।

इकाई – V

प्र.11 संहिता पाठ से पद पाठ करने के नियमों का वर्णन कीजिए।